ख्याली दत्त शर्मा

प्रधानाध्यापक
राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय
कपकोट, बागेश्वर

सपनों का स्कूल

सहायक अध्यापक – मंजू गड़िया, सुरेश चन्द्र पांडे, नीतू बिष्ट, हरीश नेगी, विनीता

सी.आर.सी.सी. – धीरेन्द्र जोशी

भोजनमाता – कमला, दीपा, चंद्रा व हंसी देवी

नामांकन – 227

यह कहानी ऐसे शिक्षक की है जो बाइचान्स शिक्षक नहीं बना बल्कि जिसका उद्देश्य ही था शिक्षक बनना, जिसने खुद को समर्पित ही शिक्षा के लिए किया। एक शिक्षक साथी ने जिसके बारे में अपने मन की बात इस तरह कही कि ऐसा शिक्षक लाख में कोई एक ही होता है जो सोशल मीडिया व अखबार जैसे प्रचार माध्यमों से कोसों दूर उत्तराखण्ड के सुदूरवर्ती क्षेत्र में सरकारी प्राथमिक शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। जिसे फेसबुकिया स्टारडम प्रभावित नहीं करता। जो बिना किसी पुरस्कार और वाहा–वाही के अपने विद्यार्थियों के साथ लगा रहता है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे परिवारों के बच्चों की बेहतर शिक्षा का लक्ष्य जिसे प्रेरित करता है। ऐसे कर्मठ और असाधारण शिक्षक ख्यालीदत्त शर्मा जी की कहानी लिखने का यह एक प्रयास भर है।

2015 के एक सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण में ख्याली दत्त शर्मा जी से मुलाकात हुई। पूरे सत्र के दौरान सिर्फ परिचय सत्र को छोड़कर वह चुप ही रहे। वे सिर्फ ध्यान से सुन रहे थे। सत्र के प्रति उनकी एकाग्रता का एहसास तब हुआ जब शर्मा जी ने चुप्पी तोड़ी और अगले दिन पुनरावलोकन सत्र के दौरान पहले दिन की चर्चा का सार और अपने अनुभव सुनाये। नॉन स्टॉप 10 मिनट तक वह बोलते रहे। उनके स्वर धीरे–धीरे तीव्र हुए लेकिन धैर्य बना रहा। ख्याली दत्त शर्मा आधुनिक शिक्षा तंत्र में रहते हुए अपने विद्यार्थियों के लिए एक उम्मीद के रूप में कायम हैं। जनपद बागेश्वर के

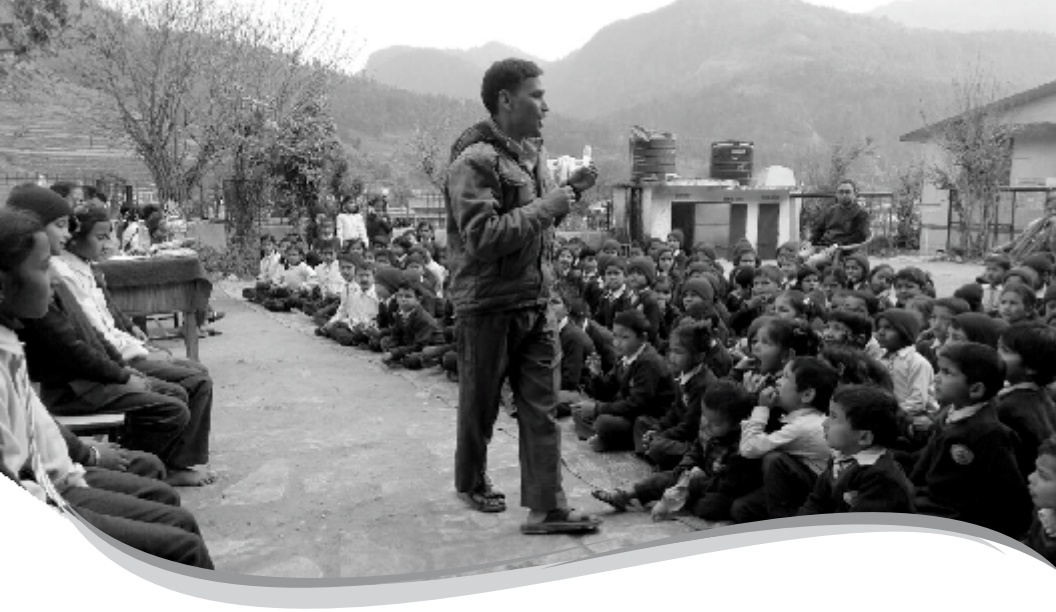

कपकोट ब्लॉक में ख्याली दत्त। वर्तमान में शोभाकुण्ड प्राथमिक विद्यालय में नियुक्त है। यह गांव आर्थिक रूप से बहुत कमजोर है। इसे मूलभूत सुविधाओं से वंचित क्षेत्र कहा जा सकता है। उस पर प्रकृति की दुरूहता यहां के भूगोल में साफ झलकती है। भूकम्प की दृष्टि से भूगर्भवेत्ताओं ने इसे जोन पांच में चिन्हित किया है। प्राकृतिक आपदा की मार भी इस क्षेत्र को यदा–कदा झेलनी ही होती है। बावजूद इसके ख्याली दत्त शर्मा ने कभी दुर्गम क्षेत्रों की दुख भरी दास्तान अपनी बात–चीत में नहीं सुनाई। उन्होंने एकल होने की समस्या भी अपने शब्दों में झलकने नहीं दी। ख्याली दत्त की मान्यता है कि बच्चों को किताबी ज्ञान के अलावा स्वयं की समझ होना भी आवश्यक है। बच्चे अपने बारे में, अपने परिवेश के बारे में जाने–समझें और अपनी समझ विकसित कर सकें। इस प्रक्रिया में बच्चों को सहयोग शिक्षक भली–भांति दे सकता है।

ख्याली दत्त को समुदाय का अच्छा सहयोग प्राप्त है। अपने बारे में खुद कुछ कहने से हमेशा ख्याली दत्त ने परहेज किया। इंसान का काम बोलता है इस सिद्धान्त को वह समझते हैं और निःस्वार्थ भाव से दिन–रात लगे रहते हैं। बच्चों को रूचिपूर्ण शिक्षा से जोड़ना, रचनावाद के सिद्धान्त का पालन करना उनका जुनून है। मुझे ख्याली दत्त शर्मा जी के विद्यालय में जाने का अवसर मिला तो लगा कि उनके बारे में जितना सुना था ख्याली

दत्त उससे कहीं आगे निकले। 2015 में राजकीय प्राथमिक विद्यालय शोभाकुण्ड की तीन बालिकाएं, हिम ज्योति पब्लिक स्कूल देहरादून के लिए चयनित हुई हैं। सैनिक स्कूल घोड़खाल भवाली के लिए दो बच्चे और जवाहर नवोदय विद्यालय के लिए तीन बच्चों का चयन ख्याली दत्त शर्मा की कर्मठता और सकारात्मक नजरिये का नतीजा है। बहुत सारी सुविधाओं से वंचित विद्यालय होने के बाद ख्याली दत्त ने 'प्रतिभा कहीं भी हो सकती है' विचार को सच साबित किया है। इस मान्यता को भी मजबूत किया कि किसी भी बच्चे में सीखने, महसूस करने और समझने की अपार सम्भावना होती है। उसे बस अवसर देने की बात है। बच्चों के साथ बहुत सहज और मित्रवत रहते हुए ख्याली दत्त शर्मा आज साथी शिक्षकों के लिए प्रेरणा बन चुके हैं। बैठकों में बहुत कम बोलने वाले और धीरे से बोलने वाले इस शिक्षक को देखकर किसी भी तरह की मान्यता बनाई जा सकती है। लेकिन राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय कपकोट पहुंचते ही सारी मान्यताएं टूट जाती हैं। मैंने बहुत सोचा कि दूरस्थ स्कूल में काम करने का दर्द ख्याली दत्त को भी सालता होगा, लेकिन ख्याली दत्त ने यह कह कर प्रश्न को दर–किनार कर दिया कि दूरस्थ क्षेत्र में रहने वाले बच्चों के लिए कौन करेगा काम? फिर बच्चे तो बच्चे होते हैं शहर या नगरीय क्षेत्र के बच्चों के पास अवसर आते रहते हैं दूरस्थ क्षेत्र के बच्चों के लिए अवसर बनाना बड़ी बात है। उससे भी बड़ी बात है एक ईमानदार कोशिश जिसमें ख्यालीदत्त शर्मा जुटे हैं।

स्कूल में स्वतंत्रता हो और बच्चों को खुलकर सीखने–खेलने और अपनी बात रखने का अवसर हो तो ही बच्चों का समग्र विकास होता है। राजकीय प्राथमिक विद्यालय कपकोट में आने से पूर्व ख्याली दत्त शोभाकुण्ड प्राथमिक विद्यालय में थे। मैं शोभाकुण्ड जाना चाहता था– यह

समझने के लिए कि ख्याली दत्त ने शोभाकुण्ड में ऐसा क्या किया कि वहां के लोग उनके मुरीद हो गये। लेकिन इन दिनों ख्याली दत्त शर्मा शोभा कुण्ड से राजकीय प्राथमिक विद्यालय कपकोट में अस्थाई स्थानान्तरण होकर आये हैं। इनको जिम्मेदारी दी है सरकारी आदर्श प्राथमिक स्कूल को बेहतर बनाने की।

ख्याली दत्त शर्मा राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय कपकोट में अपने सहयोगी शिक्षक साथियों के साथ सरकारी आदर्श विद्यालय की सोच को पुष्ट करने में पूर्ण मनोयोग से जुटे हैं। फरवरी माह में भाषा की दो दिवसीय कार्यशाला के लिए मैं ब्लॉक संसाधन केन्द्र (बीआरसी) कपकोट में था। बीआरसी प्रांगण में ही आदर्श विद्यालय कपकोट अवस्थित है। दो सौ बच्चों के प्राथमिक विद्यालय कपकोट में अभी छुट्टी की घंटी लगी थी। बच्चे लाइन से गेट के बाहर निकल रहे थे और एक बड़ा ही मधुर गीत भारत के नौजवां गा रहे थे। मुझे गीत की धुन बाहर ले आयी। कुछ देर तक गीत सुनता रहा। दिन भर कक्षा–कक्ष में सवालों से लड़ते हुए अक्षरों से भिड़ते हुए, किसी भी तरह की थकान इन बच्चों के चेहरों पर नहीं थी। ये तो तरो–ताजा लग रहे थे। शिक्षकों के चेहरों पर भी बड़ा सुकून था। किसी स्कूल में पूरा स्टॉफ हो तो बच्चों की संख्या बढ़ जाती है। लेकिन वहां शैक्षिक गुणवत्ता भी बनी रहे इस बात पर सवाल हो सकते हैं। क्योंकि गुणवत्ता का केवल मैन पावॅर मात्र से कोई लेना–देना नहीं है। इस बात को स्वयं ख्याली दत्त शर्मा ने साबित किया है। वह शोभाकुण्ड प्राथमिक विद्यालय में अकेले थे, बहुत प्रभावी कार्य कर रहे थे। अब यहां आदर्श विद्यालय में पांच लोगों की टीम को लीड कर रहे हैं।

(ख्याली दत्त शर्मा से हुई बिपिन जोशी की बातचीत पर आधारित)